(सत्संदेश फरवरी 1956 में प्रकाशित प्रवचन)

रूहानी सत्संग No. K-07

जिस जल निध कारण तुम जग आए

(1) जिस जल निध कारण तुम जग आए
सो अमृत गुर पाही जीओ॥

यह वाणी श्री गुरु नानक साहिब पहली पातशाही की सामने आ रही है। अनुभवी महापुरुष मुक्त होते हैं और लोगों को मुक्त करने आते हैं।

आप मुक्त मुक्त करे संसार॥

वे आप आज़ाद होते हैं और दुनिया को भी जकड़ों से आज़ाद कराते हैं लेकिन दुनिया फिर जकड़ों में जाना चाहती है। जैसे भेड़ों की खासियत (स्वभाव) है कि अगर बाड़े में आग लग गई हो और किसी भेड़ को रेवड़ से बाहर निकाला जाए तो वह फिर रेवड़ में शामिल हो कर जल मरना चाहती है। संत जब भी आये, दुनिया को जकड़ों से आज़ाद कराते रहे, उन के जाते ही हम फिर भूल में पड़ जाते हैं, फिर उन जकड़ों में चले जाते हैं जिन से उन्होंने हमें निकाला था। कहीं पूजा में, कहीं पाठ में, कहीं नित्त नियम और जप तप व्रत में हम बंध कर रह जाते हैं। जिस गर्ज़ (उद्देश्य) को पाने के लिए ये सब रस्म-रिवाज और नियम बने थे उसे तो हम भूल जाते हैं, सिर्फ लकीर के फकीर बन कर रह जाते हैं। छोटी छोटी बातें हैं मसलन (उदाहरणतया) तीर्थों पर जाने की जो यह रस्म चली आती है उस की गर्ज़ तो यह थी कि जो लोग रात दिन आठों पहर दुनिया के झंझटों में फंसे पड़े हैं, साल में एक आधे मरतबा (बार) वे इन झंझटों से निकल कर किसी एकांत स्थानों में बैठें। वहां जा कर किसी जागृत पुरुष की सोहबत मिल जाये तो दुनिया का जो रंग चढ़ा हुआ है, उतर जाए, थोड़ी देर के लिए होश आ जाए। सेहत की बहाली के लिए हम पहाड़ों पर जाते हैं, उसी तरह आत्मा की उन्नति के लिए लोग तीर्थों पर जाते थे। वहां जाने की गर्ज़ यही थी कि आत्मा की सेहत

बहाल हो। अब हमारी क्या हालत है? हम सब बीमार हैं। हमारी आत्मा बीमार है। हमारी आत्मा मन के अधीन है, मन इन्द्रियों के अधीन हो कर इंद्रियों के रसों और भोगों के लोभों में लंपट हो रहा है। पुराने भाइयों को तीर्थ यात्रा का तजरबा होगा। साल छमाही में भाव सहित लोग तीर्थों पर जाते थे। महीना पंद्रह दिन वहां रहते, दुनिया और दुनिया के झंझटों से फारिग हो कर यकसू (एकाग्र) हो कर वहां बैठते थे।

ये तीर्थ कैसे बने? हरि के जो दास थे उन की याद में तीर्थ बने। जहां कोई अनुभवी महात्मा रहा वह जगह तीर्थ बन गई मगर सवाल यह है किः

तीर्थ बड़ो कि हरि का दास॥

(कबीर साहिब)

अनुभवी महात्मा किसी को रोकते नहीं कि तीर्थों पर न जाओ। वे यह कहते हैं कि जिस गर्ज़ के लिए तुम वहां जाते हो उस गर्ज़ को पाओ। रस्मों रिवाज़ों की जो गर्ज़ होती है उसे भूल कर लोग लकीर के फकीर बन कर रह जाते हैं। तीर्थ कभी निर्जन स्थान थे, वहां जाकर इंसान यकसूई हासिल कर सकता था। अब हरिद्वार है, बड़ा मुकद्दस (पवित्र) तीर्थ था यह कभी लेकिन आज वहां दो सिनेमा हैं, हरिद्वार अब एक सैरगाह बन कर रह गया है। लकीर के फकीर यह समझते हैं कि तीर्थों को जा कर हाथ लगा लो मुक्ति मिल जाएगी। तीर्थों को खाली हाथ लगाने से मुक्ति नहीं मिलेगी। संत महात्मा लोगों को इन जकड़ों से आज़ाद कराने आते हैं। काशी के पास हड़ंबा एक जगह है। आम ख्याल है कि जो हड़ंबे में मरे वह नर्क में जाता है और जो काशी में मरे वे स्वर्ग में जाते हैं। कबीर साहिब फरमाते हैंः

हरि का संत मरे हड़ंबा तो भी सहज पद पाय॥

हरि का संत जो सत पद को पा चुका है वह हड़ंबे में भी मरे तो भी वह सहज अवस्था को पायेगा। संत महात्मा जब भी आये, वे दुनिया को जकड़ों से आज़ाद करते रहे। उन्होंने किसी के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाई मगर हर शै (चीज़) के बारे में सही नज़री दुनिया को देते हैं। उसकी Right Import (सही कीमत) दुनिया को समझाते हैं, रस्में जो एक नेक मकसद को सामने रखने को बनाई गई थीं वही रस्में सही नज़री से न

देख सकने के कारण हमारे लिए जंज़ीरें बन गई हैं। तीर्थों पर जाने की गर्ज़ तो यह थी कि थोड़ी देर के लिए घर बार की जकड़ों से आज़ादी मिले, दुनिया का जो रंग चढ़ रहा है, यह उतरे और इसे कुछ अपनी होश आये। इस गर्ज़ को तो पाया नहीं, बस यह समझ लिया कि तीर्थों पर स्नान करने से मुक्ति हो जाती है। श्री गुरु अमरदास फरमाते हैंः

मन मैले सब किछ मैला तन धोते मन हच्छा न होय॥

स्नान करने से जिस्म की सफाई हो सकती है, मन की मैल तो नहीं उतरतीः

इक भा लत्थी नहातेयां दो भा चढ़ गई होर॥

श्री गुरु नानक साहब का बड़ा आज़ाद कलाम है, फरमाते हैंः

जिस जल निध कारण तुम जग आये

जिस निधियों के देने वाले जल को पाने के लिए तुम दुनिया में आये, निधि कहते हैं खुशी को। दुनिया में नौ किस्म की निधियां (खुशियां) हैं, रुपया पैसा, तन्दुस्ती वगैरा नौ किस्म की निधियां हैं। सो फरमाते हैं हर किस्म की खुशी देने वाला जो जल है, 'सो अमृत गुरु पाही जियो।' वह जो अमृत है वह तुम्हें गुरु से मिलेगा।

संतों की बाणी में खास इस्तलाहात (परिभाषाएं) हैं, खास terms हैं। जब तक उन इस्तलाहात की पूरी वाकफियत न हो संतों के कलामों (वचनों) के सही मायने न तो समझ आते हैं न उन से पूरा फायदा उठाया जा सकता है। जैसे कानून की किताबों में वज़ाहत की जाती है कि फलां लफ्ज़ से हमारी मुराद यह है फलां लफ्ज़ इन मानयों में इस्तेमाल किया गया है। जब तक कानून की Terminology (परिभाषाओं) की पूरी वाकफियत न हो आम आदमी कानून की किताबों का सही मज़मून नहीं समझ सकता। इसी तरह संतों की वाणियों में जो इस्तलाहात, terms (परिभाषाएं) मिलती हैं उन के मायने समझे बगैर बाणियों का मज़मून समझ नहीं आ सकता।

यहाँ लफ्ज़ अमृत आया है। अमृत के लफ़्जी मायने हैं अमर कर देने वाली शै (चीज़) जो हमेशा की ज़िंदगी देने वाली चीज़ है। वेदों में इसे सोम-रस कहा गया है। मुसलमान फकीरों ने इसे आबे-हयात कहा।

हज़रत मसीह ने इसे Water of life कहा। मसीह एक चश्मे पर गये। एक स्पार्टन लेडी (उस कौम की औरत जिसे अछूत समझा जाता था) पानी भर रही थी, मसीह ने उस से पानी मांगा। वह झिझकी। मसीह ने घड़ा पकड़ा और पानी पी लिया और स्पार्टन लेडी से कहा, ''तूने मुझे पानी पिलाया है, मैं तुझे Water of life (हमेशा की ज़िंदगी देने वाला पानी) दूंगा।''

अमर जीवन देने वाला यह अमृत क्या है? गुरबाणी में अमृत की यह तारीफ की गई है:

अमृत साचा नाओं है कहेया कछु न जाये॥

वह कहने और समझने का मज़मून नहीं। उसे कोई लफ्ज़ों में ब्यान करना चाहे तो नहीं कर सकता। एक ऐसा गांव हो जहां किसी ने घंटा देखा ही नहीं, उन्हें लाख कहो कि घंटा टन टन टन करता है उन की समझ में नहीं आयेगा कि घंटा क्या चीज़ है। सो फरमाते हैं कि अमृत या सच्चा नाम कहने सुनने का मज़मून नहीं, वह अनुभव की चीज़ है।

पीवत ही परवाण भया पूरे शबद संभार॥

कि उस अमृत को जिसे सच्चा नाम और शब्द भी कहा है तुम पियोगे यानी उस के साथ लगोगे तो तुम मालिक की दरगाह में परवान हो जाओगे और उसमें समा जाओगे। अब अमृत को सच्चा नाम कर के ब्यान किया है। इस का मतलब यह है कि कोई झूठा नाम भी है। एक वह नाम जो अटल और लाफानी है और एक वह जो फना (खत्म) हो जाने वाला है। एक अक्षरी नाम, एक वह नाम पावर जिस का ये अक्षरी नाम बोध कराते हैं।

बावन अक्खर लोक त्रै सब कुछ इन ही माहिं॥
एह अक्खर खिर जाएंगे ओह अक्खर इन में नाहिं॥

वह इन अक्षरों से परे है, वह जो इन सब अक्षरों की Background (आधार) है उस से मिलने का सवाल है। श्री गुरु अमरदास जी ने उस का आगे और निर्णय किया है:

अमृत हर हर नाम है मेरी जिंदड़िए अमृत गुर मत पाये राम॥

अमर जीवन देने वाला वह सच्चा नाम, उद्गीत, श्रुति, नाद,

आकाशवाणी, कलमा जिसे संतों ने शब्द या बाणी करके भी ब्यान किया है वह कहां से मिलता है? गुरु से। जो उससे (प्रभु से) जुड़ा हुआ है वह तुम्हें भी उस से जोड़ सकता है। वह नाम दुनिया की हर बीमारी का इलाज है।

सरब रोग को औखध नाम॥

नाम हर किस्म की बीमारी का वाहिद (एकमात्र) इलाज है। नाम ऐसी दवा है जो हर किस्म की बीमारियों का इलाज है चाहे वह आधिदैविक रोग हों, आधिभौतिक हों या आध्यात्मिक रोग हों। आध्यात्मिक रोग यानी मन के रोग, जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार वगैरा नाम के साथ लगने से दूर हो जाते हैं। इंद्रियों के घाट से ऊपर आ गये तो इंद्रियों के विषय विकार कहां रहे? आधिदैविक रोग , बाहर के दुख, आत्मा बलवान हो तो इंसान खुशी से बरदाश्त कर लेता है। उन की Pinching (चुभन) नहीं रहती। रहे आधिभौतिक रोग यानी जिस्म की बीमारियां तो डाक्टरी असूल के मुताबित दवा किसी बीमारी का इलाज नहीं बल्कि कुदरत की जो Healing power है उस के लिए वह रास्ता साफ करती है। आत्मा में Curative power (बीमारियों को ठीक करने की ताकत) मौजूद है। नाम के साथ लग कर आत्मा बलवान हो जाये तो जिस्मानी बीमारियां भी नहीं रहतीं। अब निर्णय करते हैं कि वह अमर जीवन देने वाला नाम जिस की यह सारी सिफ्तें (गुण) ब्यान की हैं, मिलता कहां है?

अमृत हर का नाम देवैं दीखेया॥

वह अनुभवी पुरुष से दीक्षा लेने से मिलता है। ज़िंदगी से ज़िंदगी मिलती है। Life से Life आती है। उस नाम पावर का लिंक हर इंसान के अंदर मौजूद है लेकिन उस का अनुभव, उस का तजरबा, उस का Contact किसी अनुभवी पुरुष से ही मिलता है। वह अनुभव की चीज़ है।

अमृत ऐको शब्द है नानक गुरमुख पाया॥

पहले नाम कर के ब्यान किया। अब उसी चीज़ को शब्द कर के ब्यान किया है। फरमाते हैं, कोई गुरु सिख ही उसे हासिल कर सकता है। शब्द की आगे तारीफ की हैः

उपत परलै शब्दे होवे॥ शब्दे ही फिर ओपत होवै॥

नाम या शब्द उस पावर का नाम है जो सारी सृष्टि को बनाने वाली है, जो खंडों, ब्रह्मंडों को पैदा करने वाली है और उन्हें लिए खड़ी है। जब वह सत्या, वह पावर सृष्टि से खींच ली जाये तो सृष्टि की प्रलय हो जाती है और उस के बाद दोबारा सृष्टि की रचना होती है उसी के सहारे। वह मालिक अनाम है, जब होने में आया तो नाम हुआ। नाम रूप हो कर वह ज़र्रे-ज़र्रे में रम रहा है। अमृत की और तारीफ की है कि इस में बड़ा भारी रस हैः

अमृत नाम महारस मीठा॥ गुर शब्द महारस मीठा॥

गुरु द्वारा जिस शब्द या नाम का अनुभव मिलता है उस में बड़ा रस है, बड़ी मिठास है। यही और महात्मा भी कहते हैंः

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा॥ अतरस मीठा नाम प्यारा॥

वह इंन्द्रियों का मज़मून नहीं, इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर उस का ताल्लुक मिलता है और इस में बड़ी भारी मिठास है। फरीद साहब फरमाते हैंः

शक्कर, खंड, निवात, गुड़, माखेयों माझा दुद्ध॥
हब्बु वस्तु मिट्ठियां साईं न पुज्जण तुध॥

शक्कर, खांड, मिश्री, मक्खन और दूध ये सारी चीज़ें मीठी हैं मगर ऐ मालिक, तेरे नाम में जो मिठास है वह इन में से किसी चीज़ में नहीं। अमर कर देने वाला प्रभु का नाम है, उस में वह रस है जिस के आगे दुनिया के सारे रस फीके हैं। श्री गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैंः

बिखे बन फीका त्याग री सखिये नाम महारस पियो॥

सब महात्मा नाम की महिमा ब्यान करते चले आ रहे हैं कि उस में बड़ा रस है। उस के साथ लगने से सारे दुख सारे रोग दूर हो जाते हैं। मिलता उसे है जो गुरमुख हो। जिस की किसी अनुभवी पुरुष से आंखें चार नहीं हुई वह उस रस को नहीं ले सकता। अब और वाजेह (स्पष्ट) करते हैं कि वह अमृत कहां और कैसे मिलता हैः

धावत थम्मेया सतगुर मिलिये दसवां दवार पाया॥

यह जो मन-इंद्रियों के घाट पर बाहर दुनिया में फैल रहा है इसे इधर

उधर भागने से रोकना होगा, इसे अंतर्मुख खड़ा करना होगा। कोई अनुभवी पुरुष जो सत की प्राप्ति कर चुका है, उस की सोहबत संगत में, यह मन खड़ा होगा, वह इस अंतर्मुख दसवें दरवाज़े का रास्ता देगाः

तित्थे अमृत भोजन सहज धुन ~~कमी~~ उपजै
जित शब्द जगत थम रहाया॥
तहं अनेक वाजे ~~अनहद है~~ सदा अनंद है
सच्चे रहेया समाये॥
यों करे नानक सतगुर ~~मिले~~ मिलिए
धावत थम्मेया ~~सहज घर वसाया~~॥ निज घर बसेया आए॥

वहां सहज की ध्वनि, वह नाम, वह आकाशवाणी हो रही है जिस के आधार पर यह सारा जगत खड़ा है। अपने आप वह वाणी हो रही है, उसमें Sound Principle है। यह तो एक पहलू ब्यान किया उस का। वह अनुभव की शै (चीज़) है। कोई अनुभवी पुरुष ही इंद्रियों के घाट से ऊपर ला कर उस का ताल्लुक देगा। जब मन-इंद्रियों के घाट पर बाहर फैलने से हट जाए तो अंतर में बड़ी मीठी ध्वनि सुनाई देगी।

अमृत वाणी गुर की मीठी॥

अंतर में जो अमर कर देने वाली वाणी हो रही है और जिस का ताल्लुक गुरु द्वारा मिलता है उस में बड़ी भारी मिठास है, उस में महा रस हैः

हर अमृत कथा श्रेष्ठ उत्तम गुर बचनी सहजे चाखी॥

हरि की जो कथा घट घट में हो रही है वह सब से उत्तम है। वह अमर जीवन देने वाली कथा कौन सुन सकता है? जिसे कोई अनुभवी पुरुष अंतर में उस से जोड़ दे। इसीलिए सच्चे गुरु की पलटू साहिब ने तारीफ (महिमा) की है किः

धुन आने गगन ते सो मेरा गुरदेव।

इंद्रियों के घाट से नौ द्वारों से ऊपर आंखों के पीछे गगन है। इस गगन पर ला कर उस आकाशवाणी से जो अपने आप आठों पहर हर इंसान के अंतर में हो रही है, जो अनुभवी पुरुष मेरी आत्मा को उस से जोड़ सकता है वही मेरा गुरुदेव है जिस में महारस है। उस रस को

पा कर दुनया के सारे रस फीके पड़ जाते हैं। यह तो हुआ एक पहलू, एक फेज़ और क्या है इसमें?

तहं भया प्रकाश अंधेरा ज्यों सूरज रैण कराखी॥

वहां प्रकाश हो रहा है जिस से अंतर का अंधेरा दूर हो जाता है।

नाम जपत कोट सूर उजेयारा॥

कि नाम के जपने से करोड़ों सूरजों का प्रकाश हो जाता है। पहले कहा कि वहां बड़ी मीठी मीठी ध्वनि हो रही है। उस का दूसरा फेज़ है कि वहां पर प्रकाश भी है, लाईट भी है। यह समझाने की बात है। हम आंखें बंद करते हैं तो अंतर में अंधेरा है, इस अंधेरे में प्रकाश होने का सवाल है। गुरु लफ्ज़ के मायने भी तो यही हैं, 'गो-रू' यानी जो अंधेरे में प्रकाश कर दे। गुरु के मिलने से पहले अंतर में अंधेरा था और गुरु मिलने के बाद भी अंधेरा है तो गुरु क्या मिला?

अदृष्ट अगोचर अलख निरंजण सो देखेया गुरमुख आखी॥

वह अदृष्ट और अगोचर है, इंद्रियों का मज़मून नहीं। इंद्रियों के घाट से ऊपर स्थूल माया से ऊपर आकर गुरमुख इसे अपनी आंखों से देखता है। अब अमृत की सिफ्तें आईं। एक तो बड़ी सुरीली ध्वनि, आकाशवाणी हो रही है। मौलाना रूम फरमाते हैं कि उन नगमों का जो घट घट में आप से आप हर वक्त हो रहे हैं अगर मैं थोड़ा साज़ कर दूं तो कब्रों में से मुर्दे जाग उठें। अब इस वक्त हम मुर्दे ही तो हैं जो जिस्म की लम्बी कब्र में पड़े हुए हैं।

मोह माया सबे जग सोया कोई विरला गुरमुख जागे॥

मोह माया में सारा जहान सोया पड़ा है। कोई गुरमुख किसी अनुभवी महापुरुष से, किसी आमिल पुरुष से दीक्षा ले कर इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर अपने आप में जाग उठा, वह जागता है, बाकी सारा जहान मोह माया की नींद में सोया पड़ा है। गुरबाणी और निर्णय करती है:

सत्गुर विच अमृत है हर उत्तम हर पद सोये॥

अनुभवी पुरुष में वह अमृत, वह नाम पावर प्रकट है। मसीह ने कहा है Word was made flesh and dwelt amongst us. वह नाम मुजस्सम होता है, वह पोल है जिस पर परमात्मा की ताकत काम करती

है। वह Mouthpiece of God (प्रभु का मुख) है, वह लोगों को इंद्रियों के घाट से ऊपर ला कर नाम से जोड़ता चला जाता है। यह उस का काम है:

नानक किरपा ते हर ध्याइये गुरमुख पावै कोई॥

मालिक की खास दया हो तो नाम का ताल्लुक मिलता है। वह सत्गुरु (मिले हुए को) से मिला देता है जो इंद्रियों के घाट से ऊपर ला कर उसे नाम से जोड़ देता है। सत्गुरु की तारीफ क्या है?

सतगुर पुरख अमृतसर वडभागी नहावैं आये॥
तिन जनम जनम की मल उतरे निर्मल नाम द्रिड़ाये॥

वह अमृत का सरोवर है, बड़े भाग्य वाले लोग हैं जो इस अमृत के सरोवर में स्नान करते हैं। उन में अमृत बरस रहा है, उन की रसना (ज़बान) में अमृत बरस रहा है। उन की ज़बान से जो लफ्ज़ आ रहे हैं वे अमृत रस से चार्ज हो कर आ रहे हैं। वे दूसरों को भी ठंडक देते हैं। मौलाना रूम से किसी ने कहा कि आप जो शेयर कहते हैं उन में कई लफ्ज़ वज़न से बाहर होते हैं। उन्होंने जवाब दिया:

शेयर भी गोयम पुराज़ कंदो नबात।
मन ना दानम पाअलातन फाअलात॥

कि अमृत से भरे हुए मेरे वचन चले आ रहे हैं। उन के वज़न का नाप तोल, तुम आप कर लो। यही गुरबाणी कहती है:

अमृत बाणी गुरु की मीठी

अनुभवी पुरुष के लफ्ज़ों में चार्जिंग है, टिकाव है, शांति है। संतों ने खोल-खोल कर ब्यान किया है कि वह अमृत जिस की तारीफ आ चुकी है कहां मिलता है और कैसे मिलता है। गुरवाणी कहती है:

नौ दरवाज़े नवें दर फीके एह अमृत दसवें चुवीजे॥

ये जो नौ दरवाज़े हैं शरीर के जहां से हमारी सुरत बाहर दुनिया में फैल रही है, दो कान, दो आंखें, दो नासिका, मुंह और दो (नीचे) के दरवाज़े, ये नवें दर इस अमृत से खाली हैं। वह अमृत दसवें दरवाज़े में जा कर मिलेगा, वह दसवां दरवाज़ा कहां है।

नौ दरवाज़े प्रगट किये दसवां गुप्त रहाया॥

ये नौ दरवाज़े तो प्रकट हैं, दसवां गुप्त दरवाज़ा है। जब तक इन नौ दरवाज़ों में हम बैठे हैं हमारी सुरत बाहर दुनिया में फैल रही है।

नौ दर देख जो कामण भूली वस्त अनूप ना पाई॥

जब तक हम इन दरवाज़ों में बैठे हैं हम उस अनूप वस्तु को, उस अमृत को जो अंतर में है, नहीं पा सकते। वह अमृत मिलता कैसे है? किसी अनुभवी पुरुष से।

सो अमृत गुर पाही जियो॥

अनुभवी पुरुष क्या कहता है? वह कहता है चलो अंतर। जब तक तुम इन नौ दरवाज़ों में बैठे हो तुम इस अमृत का रस नहीं ले सकते। अमृत को पाने के लिए इंद्रियों के घाट से हटना होगा। आंखों के पीछे वह गुप्त दरवाज़ा है जहाँ आकर तुम उस अमृत रस को पा सकते हो। गीता के छठे और आठवें अध्याय में भगवान कृष्ण ने इस रास्ते का इशारा दिया है कि दो भ्रूमध्य, नासिका के अग्र भाग, दोनों आंखों के ऐन बीच में आंखों के पीछे नाक की सीध में वह गुप्त रास्ता है, जो पिंड (जिस्म) से अंड और ब्रह्मण्ड को जाता है, निज घर जाने का रास्ता है। अमृत रस है तो इस के अंतर में मगर कोई अनुभवी इसे उस का अनुभव दे तभी यह उसे चख सकता है।

अमृत सतगुरु चवाया दसवें दवार प्रगट होए आया॥

सतगुरु इस रस को चुवाता है। वह रस गिरने लग जाता हैः

तहं अनदिन शब्द वज्जे धुन बाणी सहजे सहज समाये॥

उसमें ध्वनि हो रही है जिसके साथ लगने से तुम सहज में समा जाओगे जहां से वह आ रही है। मालिक से मिलने का सहज ज़रिया शब्द, बाणी या नाम के साथ लगना है। बड़ा खोल कर ब्यान किया है इस मज़मून को संतों ने कि वह अमृत, वह नाम, शब्द या ध्वनि क्या है? कहां से मिल सकता है? एक इशारा आता है कि सिकंदर के मुर्शिद खिज़र उसे आबेहयात के चश्मे पर ले गये। वहां बड़ा अंधेरा था, दो मार्ग हैं, एक

प्रेय मार्ग दूसरा श्रेय मार्ग। प्रेय मार्ग बड़ा प्यारा मार्ग है मगर यह फैलाव का रास्ता है, इसमें आगे रास्ता नहीं मिलता, फैलाव में जकड़ कर मर जाता है। श्रेय मार्ग में पहले अंधेरा ही अंधेरा है। इस अंधेरे के पार ध्वनि और प्रकाश है। तुलसी साहब ने इशारा दिया है, इस पर्दा-ए-सियाह के ज़रा पार देखना। थोड़ा सा रास्ता खुले तो फिर खुलता ही चला जाता है। अमृत के बारे में आगे और निर्णय किया है कि वह कहां है?

नौ निध अमृत प्रभ का नाम॥
देही में इस का बिसराम॥

हर किस्म की खुशियां देने वाला प्रभु का नाम जो अमर जीवन के देने वाला है वह इस छः फुट के इंसानी जिस्म के अंतर में है। क्या वह सब के अंतर में है? गुरबाणी जवाब देती है:

जेते घट अमृत सब ही माहिं भावे तिसे पिलावे॥

वह अमृत सब के अंतर में है। वह घट घट में मौजूद है लेकिन जब तक मालिक दया न करे कोई उसे पा नहीं सकता। मालिक की दया न हो तो अनुभवी पुरुष नहीं मिलता। अनुभवी पुरुष न मिले तो यह इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर उस रस को पा नहीं सकता जो इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर ही मिलता है।

अंतर खूटा अमृत भरेया शब्दे काढ पिए पनिहारी॥

गुरबाणी में जगह जगह निर्णय किया है कि अमृत इस के अंतर में है:

घर ही में अमृत भरपूर है मनमुक्खां साद न आवही॥

वह अमृत इस के अंतर में है लेकिन जो मनमुख हैं, जिन्हें अनुभवी पुरुष नहीं मिला, जो मन-इंद्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बने बैठे हैं, जिन्हें इंद्रियों के घाट से ऊपर आने का मौका ही नहीं मिला उन्हें इस अमृत की खबर नहीं।

ज्यों कस्तूरी मिरग न जाणे भ्रमदा भरम भुलाया॥

जैसे कस्तूरी हिरण के अपने अंदर होती है लेकिन वह खुशबू की तलाश में बाहर भटकता रहता है। जहां हवा के झोंके में कस्तूरी की खुशबू आती है हिरण उस के पीछे दौड़ता है, वह इधर उधर भटकता रहता है। बाहरमुखी जो थोड़ी बहुत खुशबू इंद्रियों के घाट पर मिलती है वह अपनी

महवियत की खुशबू है। रस इस के अंतर में है लेकिन यह उसे बाहर तलाश करता है, कभी एक जगह कभी दूसरी जगह उठकता फिरता है और जीवन बरबाद कर के चला जाता है। शायर कहता है:

यार मन खाना ओ मन गिर्द जहां मी बैनम।
आब दर कूज़ा मन तिश्ना लबां मी गरम॥

कि वह मेरा प्यारा मेरे अंतर में था और मैं बाहर दुनिया में उसे तलाश करता फिरा। किस कद्र अफसोस की बात है कि अमृत का भंडार इस के अंतर में है और यह उसकी तलाश में बाहर दुनिया में मारा मारा फिर रहा है। महात्मा हमें अंतर्मुख करते हैं। वे कहते हैं कि तुम्हारे अंतर में निजानंद का भंडार है। बार बार वे यही हिदायत करते चले आये:

सब कुछ घर में बाहर नाहिं॥

सब कुछ इस में है लेकिन यह बाहर उसे तलाश करता फिरता है और जीवन बरबाद कर के चला जाता है। सो गुरु नानक देव जी फरमाते हैं कि हर किस्म की खुशियां देने वाले जिस अमृत (अमर कर देने वाले) जल की खातिर तुम दुनिया में आये हो वह अमृत तुम्हें किसी अनुभवी महात्मा से मिलेगा, किसी ऐसे गुरु से मिलेगा जो सत पद को प्राप्त कर चुका है। गुरबाणी को सहज में पढ़े जाने से उसकी हकीकत का पता नहीं चलता जब तक कि बाणी की इस्तलाहों (परिभाषाओं) की, उस की Terminology की, पूरी वाकफियत (जानकारी) न हो। फरमाते हैं कि वह अमृत है हमारे अंतर में लेकिन अंतर्मुख होने का राज़, अमृत का कंटैक्ट किसी अनुभवी गुरु से ही मिलता है। इस अमृत में दो तजरबे हैं। एक तो बड़ी सुरीली ध्वनि जिस में महारस है, दूसरे प्रकाश है उसमें। कितना वाजह (स्पष्ट) करते हैं इस मज़मून को। वह अमृत मिलेगा कहां से?

सो अमृत गुरु पाही जियो॥

और भी किसी जगह उसे पा सकते हैं? आगे जवाब देते हैं:

(2) छोड़ो वेश भेख चतुराई दुबिधा एह फल नाहिं जीओ॥

बड़ा आज़ाद कलाम है, श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं, जकड़ों को छोड़ दो कोई भी समाज हो उसके रस्मो-रिवाज़ को पूरा करो मगर रस्मो-रिवाज़ की गर्ज़ को देखो, उसके मकसद को समझ कर उसे पूरा

करो। खाली शकलों और बनावटों की जकड़ों में न रह जाओ। अब सिखों में पांच कक्के हैं, कड़ा है, उसे धारण करने की क्या गर्ज़ है?

तग्ग न नारी तग्ग न इंद्री॥

इंद्रियों पर काबू रखो, आंखों पर कंट्रोल रखो, दिल पर, आंखों पर, इंद्रियों पर सब पर कड़ा पहरा रखो। कंघा क्या है? उसकी गर्ज़ क्या है? रोज़ Self introspection (जीवन की पड़ताल) करो, अपने आप पर कंघा करो, जो भी खामियां तुम्हारे अंतर में हैं उन्हें चुन चुन कर बाहर निकालो, उन्हें Weed out करो। यह काम रोज़ करो। यह है कंघा करना। अब कच्छा (लंगोटा) धारण करने की गर्ज़ थी ब्रह्मचर्य धारण करना। हम रस्मो-रिवाज़ के चिह्न चक्र, बाहरी निशान और अलामतें तो धारण कर लेते हैं उनकी गर्ज़ पूरी नहीं करते। जिसका ब्रह्मचर्य कायम है, जिस की इंद्रियां दमन हैं, जो वाहेगुरु का भाणा मानता हो, बताओ ऐसे सिख का कल्याण होगा कि नहीं। महात्मा हमें जकड़ों से आज़ाद करते हैं। वे यह नहीं कहते कि समाज को छोड़ दो, वे कहते हैं कि रस्मों-रिवाज़ों की जो गर्ज़ है उसे पूरा करो। खाली चिह्न चक्रों में, शकलों और बनावटों की जकड़ों में न रह जाओ। अब मंदिरों में जो बाहर घंटा बजाते हैं उसका मतलब तो यह वाजेह करना था कि अंतर में ध्वनि हो रही है जो घंटे की आवाज़ से मिलती जुलती है। हम अंतर की ध्वनि से तो लगे नहीं, बाहर की जकड़ों में रह गये कि घंटा नहीं बजाया तो भगवान जागेंगे नहीं। रस्मो-रिवाज़ के सिलसिले में जो भी करो सच्चे दिल से करो, उसकी गर्ज़ को पूरा करो। ये जो समाजों के चिह्न चक्र हैं इन चिह्न चक्रों को धारण करते जाओ, उनसे जो गर्ज़ वाबिस्ता (छिपी) है उसे पूरा करने से परमार्थ के लिए ज़मीन तैयार हो जायेगी लेकिन कोई यह समझे कि किसी खास समाज की शक्लें और उसके चिह्न चक्र धारण करने से कल्याण होगा तो यह सोलह आने झूठ है। रविदास जी चमार थे, उन्होंने अनुभव पाया कि नहीं? त्रिलोचन ब्राह्मण थे, नामदेव छींबा ज़ात से थे, सदना जी कसाई थे, गुरु नानक साहब खत्री थे। अनुभव किसी खास समाज या जाति का अजारा नहीं। रस्में भी पालो, उनकी भी ज़रूरत है। यसु मसीह से लोगों ने कहा कि तुम कहते हो कि मैं सच्चा बादशाह हूं और

बादशाह हम से खिराज (टैक्स) मांगता है, हम क्या करें। मसीह ने फरमाया, मुझे सिक्का ला दो। वे सिक्का लाये तो मसीह ने पूछा, इस पर किस की मोहर है। लोगों ने जवाब दिया, बादशाह की। मसीह ने फरमाया तो फिर जो बादशाह का हक है वह उसे दो (Give unto Ceasar). चिह्न चक्र की जो गर्ज़ है उसे हासिल करो, खाली शकलों की जकड़ों में रह गये तो कल्याण नहीं होगा। उनकी गर्ज़ हासिल करने से हृदय की तैयारी होगी मगर असली शै (चीज़) अनुभवी पुरुष से, गुरु से ही मिलेगी। वह चीज़ है नाम, अमृत। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर न आये उस का ताल्लुक नहीं मिलता। ये वेष भेख और समाजों के चिह्न चक्र सब जिस्म से ताल्लुक रखते हैं। नाम का ताल्लुक जिस्म से ऊपर आकर मिलता है। श्री गुरु नानक साहब के पास साधु किंगरी बजाते हुए आये। उन्होंने फरमायाः

जोगी सा किंगरी बजाओ जित हर स्यों लिव लाए॥

किंगरी अनूप बाजे जोगिया मतवारो रे॥

यह बाहर की किंगरी क्या बजा रहा है। अंतर में किंगरी की जो ध्वनि हो रही है उससे लगो। उस ध्वनि को सुन कर प्रभु से तुम्हारी लिव लगेगी, प्यार पैदा होगा।

यह जो माथे पर तिलक लगाने का रिवाज है कई किस्म के तिलक लगाये जाते हैं। मसलन सीधी लकीरें, मतलब यह है ईड़ा, पिंगला, सुष्मना तीन हैं। दरमियान की नाड़ी सुष्मना है। उसके पार जाने की यह अलामत (निशानी) है। जितनी किसी की रूहानी रसाई होती थी उसके मुताबिक माथे पर तिलक लगाये जाते थे जिससे पता लग जाता था कि कौन कहाँ [redacted] है और एक दूसरे से मिलने जुलने और तबादला-ए-ख्याल (विचार-विमर्श) में आसानी रहती थी। अब महज एक रस्म बाकी रह गई है, पहुंचे कहीं भी नहीं और तिलक के चिह्न चक्र सजाने में आधा घंटा लग जाता है। संत महात्मा दुनिया को इन जकड़ों से आज़ाद करते हैं। वे न चिह्न चक्रों के खिलाफ हैं न समाजों के, वे जकड़ों के खिलाफ होते हैं। वे आप आज़ाद होते हैं और दुनिया को आज़ाद कराने आते हैं। वे चीज़ को सही नज़र से देखते हैं और दुनिया को सही नज़री देते हैं। श्री गुरु नानक साहब की जनेऊ धारण करने की रस्म होने लगी तो उन्होंने

क्या कहा। जागृत पुरुष की नज़र देखो कि वे किस नज़र से देखते हैं। जनेऊ में खास तारें होती हैं, उनका खास मतलब है। श्री गुरु नानक साहब ने फरमायाः

दया कपाह संतोख सूत जत गंढी सत वट॥
एहा जनेऊ जीये का है तां पांडे घत॥
ना एह तुट्टे ना मल लग्गे न एह जले न जाये॥
धन सो माणस नानका जो गल चल्ले पाये॥

दया की कपास हो, संतोष का सूत, ब्रह्मचर्य की गांठ और सत की उस सूत में बाट दो। यह जी का जनेऊ है, न यह कभी जले न मैला हो। संत यह नहीं कहते कि जनेऊ धारण कर दिया, न करो। वे कहते हैं कि जनेऊ धारण करने की जो गर्ज़ है उसे भी पूरा करो। अगर वेषों भेखों के धारण करने या बदलने से प्रभु मिलता है तो हम उसकी तलाश में आज बाहर न भटकते। संत हमें हर चीज़ को सही नज़री से देखना सिखाते हैं। किसी भी समाज में रहो उस समाज के सिद्धांत के जो सदाचार के नियम हैं उनको पूरा करो, जकड़ों में न पड़ो, यह चतुराई और दुविधा का कारण बन जाती है। रस्मो-रिवाज़ की गर्ज़ को देखो। अब ईसाईयों में नंगे सिर बैठना अदब की निशाली है। वे गिरजे में नंगे सिर बैठते हैं। गुरुद्वारे में सिर पर पगड़ी रख कर बैठना अदब की निशानी है। जो जकड़ों में पड़े हुए हैं वे क्या करते हैं, गुरुद्वारे में नंगे सिर बैठो तो वे कहते हैं सिर उतार देंगे और गिरजे में सिर ढांपकर बैठो तो वे कहते हैं कि सिर उतार देंगे। भई मकसद को देखो, दोनों का यही मकसद है कि खुदा के हज़ूर में बाअदब हो के बैठो। वैसे देखो तो परमात्मा कहां नहीं, जहां उसके हज़ूर में पूरी श्रद्धा और भाव सहित बैठो वही जगह मंदिर है, वही मस्जिद है, वही गिरजा है, वही गुरुद्वारा है। कई भाई यहां आकर पूछते हैं कि आपने मंदिर कहां बनाया है। नीचे ज़मीन है ऊपर आसमान है। यहां मैंने कोई खास मंदिर नहीं बनाया। यह अनुभवी पुरुष की कृपा है जो लोगों को फैज़ मिल रहा है। वह आज़ाद करने आया था, आज़ाद कर गया। एक दिन की भी छुट्टी मिल जाये बच्चों को तो कितनी खुशी होती है, बच्चे खुशी से उछलते हैं, कूदते हैं। जकड़ों में दुविधा है, दुख

है। किसी भी समाज में रहो वह समाज तुम्हें मुबारिक मगर उस समाज में रहते हुए इतने ऊपर उठ जाओ कि सारी दुनिया तुम्हारा समाज बन जाये। एक पीले कपड़े पहन कर प्रभु के गुण गा रहा है, एक नीले कपड़े पहन कर गा रहा है। मुखतलिफ भेसों में और मुखतलिफ ज़बानों में उसी प्रभु के गुणानुवाद ही तो गाये हैं।

सैंकड़ों आशिक हैं दिला राम सबका एक है।
मज़हबो मिल्लत जुदा हैं काम सबका एक है॥

हम उस चीज़ को भूल गये हैं कि हिन्दू का खुदा और है और मुसलमानों का खुदा और। चार शराबी आपस में मिलें तो एक दूसरे को देखकर उनमें जान पड़ जाती है। किसी तरह आपस में गले मिलकर बैठे हैं एक प्रभु का नाम लेने वाले। प्रभु प्रेम के मतवाले जकड़ों में पड़कर एक दूसरे को बुरा भला क्यों कहें। यह किन का वतीरा है? जो लोग पिंड से, जिस्म से ऊपर नहीं आये जिनकी अंतर की आंख नहीं खुली जिससे सब में परमात्मा का जलवा नज़र आता है। [redacted] गुरु अर्जुन [redacted] साहब, हज़रत मियां मीर और छज्जू भक्त तीनों अनुभवी महापुरुष एक ज़माने में हुए। उनका आपस में कितना प्यार था? श्री गुरु अर्जुन साहब ने ग्रंथ साहब के लिए बाणियां एकत्र की तो क्या कसौटी रखी, जो भी अनुभवी महात्मा हुए उन सब के कलाम उसमें शामिल किए। चुनांचे ग्रंथ साहब में नामदेव छींबा, कबीर जुलाहा है, रविदास जी चमार, सदना कसाई, सैना नाई तक के श्लोक मिलते हैं। जब वर्णों की बुनियाद रखी गई थी तो यह पाबंदी नहीं लगाई गई थी कि ब्राह्मण का बेटा ही ब्राह्मण होगा, वर्णों की तकसीम कर्म के मुताबिक की गई थी लेकिन बाद में यह चीज़ पैदा हो गई कि ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण और शुद्र का बेटा शुद्र होगा। पानी जब निकलता है तो साफ होता है, आगे चलकर उसमें आलायशें (मैलें) शामिल हो जाती हैं। परमात्मा ने किसी को मोहर लगाकर नहीं भेजा कि यह हिन्दू है, यह मुसलमान है, उसने तो इंसान बनाए। ये जात पात के लेबल हमारे लगाए हुए हैं। यह एक अनुभवी पुरुष का आज़ाद कलाम है जो अकल सीमा Common sence भी अपील करता है। [redacted] गुरु नानक साहब एक जगह पर फरमाते हैंः

पंथा प्रेम न जाणई

कि जो पंथों की, समाजों की और उनके रस्मो-रिवाज़ की जकड़ों में हैं वे प्रेम की सार क्या जाने। यहां फिर एक बात को वाजेह (स्पष्ट) कर दिया जाये ताकि किसी भाई को गलतफहमी न रहे कि समाजों और उनके रस्मों रिवाजों की मुखालफल हमारा मकसद नहीं, किसी भी समाज में रहो तुम्हें मुबारिक। समाज के जो रस्मो-रिवाज़ या चिह्न चक्र हैं जिस गर्ज़ से ये बनाए गये हैं उस गर्ज़ को हासिल कर लो। खाली चिह्न चक्र धारण करने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। ~~संतों का नज़रिया यह है कि वे न किसी की तारीफ करते हैं न निंदा~~। वे हर चीज़ को सही नज़री से देखते हैं और जिस चीज़ की जितनी कीमत है उतनी ही उसकी कीमत डालते हैं। उनकी तालीम आज़ाद होती है। वे कहते हैं कि जिस समाज में हो तुम्हें मुबारिक। समाजों के नियमों का पालन करते हुए सदाचार का जीवन बनाओ। यह परमार्थ के लिए ज़मीन की तैयारी है। आगे अमृत हासिल करने के लिए सब भाइयों को ख्वाह वे किसी समाज से ताल्लुक रखते हों किसी अनुभवी पुरुष के पास जाना होगा। अनुभवी पुरुष सब समाजों को अपनी समाज समझते हैं, सबसे प्यार रखते हैं। यही वजह है कि जब ऐसे महापुरुष चोला छोड़ते हैं तो हिन्दू कहते हैं कि वे हिन्दू थे, मुसलमान कहते हैं कि वे मुसलमान थे। वे सारी दुनिया को रोशनी देने आते हैं, वे खुद आज़ाद होते हैं, दुनिया को आज़ाद कराते हैं। इसी लिए कहा है कि जिसने गुरु को जान लिया वह अभय हो गया। हमने अनुभवी पुरुष को जाना ही नहीं। हज़ूर को ~~कई भाइयों ने~~ जाना ही नहीं, वह आज़ाद पुरुष थे। उनका फरमान था कि कोई ऐसी Common ground (सांझी जगह) बनाओ जहां सब इंसान ख्वाह (चाहे) किसी जमात, धर्म या समाज से ताल्लुक रखते हों, एक जगह मिलकर बैठ सकें। दुनिया जकड़ों में इतनी उलझ के रह गई है कि कोई ऐसी मुशतरका (सांझी) जगह ही नहीं रही। हज़ूर ने फरमाया कि वहां किसी बोले नारे की कोई जकड़ न रखो, राम राम कहो, सत श्री अकाल कहो, अपने बोले सबको मुबारिक। उन्हीं महापुरुष के फरमान की तामील हो रही है। यह जगह सबकी सांझी है जहां हज़ूर की दया से सब को फैज़ मिल रहा है। ये

धर्म ग्रंथ क्या हैं? एक Banquet hall of spirtuality (रूहानियत का खज़ाना) हैं। खाली अक्षरों का फेर है ब्यान तो सब उसी हकीकत को कर रहे हैं, सब उस प्रभु का गुणानुवाद कर रहे हैं। जिसे प्रभु से प्यार है उसका सबसे प्यार होगा। अब सिख कहें कि सिख मत सब से ऊँचा है। ईसाई कहें कि ईसाइयों के इलावा और कहीं कल्याण नहीं। भई जो भी महापुरुष की तालीम को धारण करेंगे, उसे अमल में लायेंगे उन सबका कल्याण होगा मगर शर्त अमल की है। Be the doers of the Word and not the hearers alone. हमने Word की, नाम, शब्द आकाशवाणी, ध्वनि, उद्गीत, किसी नाम से उस रमी हुई घट घट व्यापी ताकत को ब्यान कर लो, की पूजा करनी थी, उसके साथ लगना था, 'L' का इज़ाफा कर दिया, हम Word की जगह World के पुजारी बन गये, दुनिया की जकड़ों में फंसकर खुदा से दूर हो गये। अनुभवी पुरुष हर चीज़ का Right import (सही मूल्य) दुनिया के सामने रखते हैं। अगर हम जगड़ों में रह जायें तो इसका नतीज़ा क्या होगा? दुविधा बढ़ेगी, आपस की कशमकश बढ़ेगी, Clash between class and class (क्लासों-क्लासों में टकराव) होगा। फिर अपना अपना पक्ष सिद्ध करने, अपनी बरतरी (बड़ाई) साबित करने के लिए चतुराई से काम लेंगे। भई इंसान का जिस्म प्रभु का ग्रंथ है, इसको खोजो। जो इंद्रियों के घाट से ऊपर आए और अपने आपको जिन्होंने जान लिया उन्होंने प्रभु को जान लिया। यह सबसे ऊँचा आदर्श है। [redacted] गुरु नानक साहब के पास योगी आये। उनसे बातचीत होने लगी, आपने फरमायाः

आई पंथी सगल जमाती मन जीते जग जीत॥

योगियों में आई पंथ सबसे ऊंचा पंथ है। [redacted] गुरु नानक साहब ने फरमाया कि हर इंसान अपने आप को जानने और प्रभु को पाने की तलाश में है। यह इल्म है जिसे हासिल करने के लिए हर इंसान दुनिया में आया। प्रभु को पाने का इल्म हासिल करने की जमात में हर इंसान दाखिल है और इस लिहाज से सब इंसान हम जमात (सहपाठी) हैं। यही सबसे बड़ा पंथ है और इस पंथ का सबसे बड़ा आदर्श है कि मन को जीत लो तो सारी दुनिया को तुम जीत लोगे। सब इंसान चाहे वह किसी मज़हब या

समाज से ताल्लुक रखते हों इस जमात में दाखिल हैं। All humanity is one, दशम् गुरु साहब फरमाते हैं:

माणस की जात सबै एकै पहचानबो॥

जो इस हकीकत को जानने वाला है वह सबसे ऊँचा है। It is better to be born in a temple but to die in it is sin. इंसान किसी न किसी समाज में पैदा होता है। समाजों की, कोई भी समाज हो, रस्मो-रिवाज़ की गर्ज़ तो यह है कि इंसान नेक पाक जीवन बसर करे, सदाचार धारण करे, इंसान इंसान के काम आये और वह एक Good world citizen (अच्छा नागरिक) बन जाए लेकिन ये सब कुछ करते हुए अमृत को, अमर जीवन देने वाले नाम को पाने के लिए किसी अनुभवी गुरु के पास जाना होगा। वह अमृत घट घट में है मगर मनमुखों को, जिन्हें अनुभवी गुरु नहीं मिला उसकी सार नहीं मिलती। [redacted] गुरु अर्जुन साहब ने जब अनुभवी पुरुषों की वाणियां एकत्र कीं तो फरमाया:

प्यो दादे का खोल डिट्ठा खज़ाना॥
तो मेरे मन भया निधाना॥

ये जो धर्म ग्रंथ हैं ये हमारे बाप-दादा का विरसा हैं। उन्हें पढ़कर उनका तात्पर्य समझने और उनकी तालीम को ग्रहण करने की ज़रूरत है, खाली जकड़ों से काम नहीं चलेगा।

(3) मन रे थिर रहो मत कत जाही जीओ॥
मन रे थिर रहो मत कत जाही जीओ॥

अब फरमाते हैं कि अमृत घट घट में मौजूद है लेकिन उसे पाने के लिए मन को स्थिर करना होगा, उसे खड़ा करना होगा।

अमृत मन ही माहिं पाईये गुरु प्रसाद॥

अमृत को पाने के लिए मन को स्थिर करो। ~~उसे कहो तू बाहर क्यों भागता फिरता है, तू बाहर न भाग। तू लज़्ज़त का आशिक है, लज़्ज़त की तलाश में तू क्यों बाहर दौड़ता फिरता है, तू अंतर चल। तेरे अंतर में महारस है, निजानंद का भंडार है, नज़ारे, सुन्दर दृश्य वगैरा हैं।~~ मन से कहो कि तू अंतर चल, तेरे अंतर में वह राग रंग हैं जिन्हें सुनकर मुर्दे कब्रों से जाग उठें। ऐसे सुहाने नज़ारे हैं जो लाब्यान हैं। जिन्होंने उस लज़्ज़त

को पाया है उन्होंने दुनियावी मिसालें देकर उस कैफियत को वाजह करने की कोशिश की है:

ज्यों कामी काम लुभावै॥ त्यों हर जन हर जस भावै॥

बड़ी भद्दी मिसाल है, कहां काम, कहां नाम की लज़्ज़त लेकिन और कोई दुनियावी मिसाल नहीं। टूटे फूटे फूस की झोंपड़ियों वाला कोई गांव हो, जहां किसी ने कोई पक्का मकान भी न देखा हो, उनके सामने महल की शान-ओ-शौकत ब्यान करो तो क्या लफ्ज इस्तेमाल करोगे? ब्यान है, लफ़्ज़ों में ब्यान नहीं हो सकती। दुनिया की कोई मिसाल उसको वाजह नहीं कर सकती।

जब ओह रस आवा॥ एह रस नहीं भावा॥

अंतर की इस लज़्ज़त को, नाम के महारस को पा जाओ तो दुनिया के सारे रस फीके पड़ जाते हैं। इस लज़्ज़त को पाकर बड़े-बड़े राजा महाराजा दुनिया को लात मार कर चल दिये। आखिर कोई लज़्ज़त थी नाम में। हज़रत इब्राहीम अधम बादशाह थे, जब यह रस आया तो राजपाट छोड़ दिया और जाकर दरिया-ए-दजला के किनारे बैठ गये। अमीर वज़ीर उन्हें वापस लाने के लिए गये तो फरमाया कि दुनिया मेरे आगे हेच (बेकार) है। जब लोग पीछे पड़े तो उन्होंने चुपके से एक सूई दरिया में डाल दी और कहा कि सूई वापिस लाकर मुझे दो। बहुतेरी तलाश की लेकिन दरिया में से एक सूई का निकालना अमर मुहाल (मुश्किल) है। लोगों ने कहा इस एक सूई के बदले दस हज़ार सूइयां ले लीजिए मगर वह अड़े रहे कि मुझे तो वही एक सूई चाहिए। इतने में उन्होंने तवज्जो दी तो एक मछली दरिया में से वही सूई अपने मुंह में लेकर आ गई। हज़रत इब्राहीम अधम बोले मेरी यह बादशाहत दुनिया की बादशाहत से बढ़कर है जिसे मैं छोड़ आया हूँ। जिसने ज़िंदगी का मुअम्मा (भेद) हल कर लिया, जो ज़िस्म के ऊपर आकर हमेशा की ज़िंदगी पा गया कुदरत उसके इशारे की मुंतज़र (इंतज़ार में) रहती है, वह उसकी Beck and Call पर रहती है। वह Conscious Co-worker हो जाता है, वह ज़िंदा जावेद हस्ती होती है। ऐसे महापुरुष की महिमा सारे वेद, शास्त्र, धर्म ग्रंथ वर्णन करते चले आये हैं।

मैं शुरू से ही Inquisitive nature का था। नौवीं जमात में पढ़ता था तो मैंने एक मरतबा (बार) अपने उस्ताद से, जो पादरी थे, पूछा लोग महात्माओं और महापुरुषों के आगे बड़े लकवलकाब लगाते हैं, जैसे श्री महाराज, 108 वगैरा, आप अपने पैगम्बर को सिर्फ यसू कहते हैं। इसका क्या कारण है? उन्होंने मेरे सवाल का बड़ा सुंदर जवाब दिया। कहने लगे, परमात्मा जो सब से बड़ा है वह सबका खालिक़ और मालिक है, उसके नाम के साथ क्या हमने कभी कोई लकाब लगाया? कभी किसी को खुदा साहब या श्री हज़ूर परमात्मा महाराज कहते सुना है। मसीह को हम खुदा का बेटा मानते हैं। खुदा के नाम के साथ कोई खिताब लकाब नहीं लगाया जाता तो मसीह के नाम के साथ क्योंकर लगाया जा सकता है? जैसे परमात्मा की कोई तारीफ नहीं की जा सकती, जो मालिक में अभेद हो गये हम उनकी महिमा क्या जान सकते हैं?

दिली रा दिली मी शनासद

जो जिस्म जिस्मानियत की कैद में हैं वे आसमानों पर परवाज़ करने (उड़ने) वालों की महिमा को क्या जान सकते हैं। जो दूसरों को भी तजरबा देते हैं आत्म-अनुभव का, ऐसे ही अनुभवी महापुरुषों के वेद शास्त्र, धर्म ग्रंथ और ऋषि मुनि महात्मा जो आज दिन तक आये, गुणानुवाद गाते आये हैं।

(4) बाहर ढूंढत बहुत दुख पावे घर अमृत घट माहीं जीओ॥

फरमाते हैं कि वह अमृत तेरे अपने अंतर में है और तू उसे बाहर तलाश कर रहा है। उसका नतीजा दुख के सिवाय और क्या हो सकता है? दुनिया की लज़्ज़त हासिल करने के लिए तो हर शख्स की खुशामद करता फिर रहा है।

सेव करे जन जन की

उस लज़्ज़त की तलाश में कभी इधर, कभी उधर मारा मारा फिर रहा है लेकिन दुनिया में सुख कहां? इस निजानंद का भंडार तो तेरे अपने अंतर में है।

बाहर ढूंढत बहुत दुख पावै घर अमृत घट माहिं जीओ॥

घट घड़े को भी कहते हैं और इस जिस्म को भी। फरमाते हैं अमृत

इस जिस्म के अंतर में है, इसमें जाओ। जो जीते जी मर के इंद्रियों के घाट से ऊपर आ गए वे हमेशा की ज़िंदगी देने वाले इस अमृत को पा गएः

जो जन मर जीवे तिन अमृत पीवे मन लागा गुरमत भाओ॥

जो जीते जी मर के इंद्रियों के घाट से ऊपर आता है और उस अमृत को पीता है वरना-

आब दर कोह दमन तिशना लबां मी गुरदम॥

पानी इसके अंतर में है और यह बाहर प्यासा भटकता फिरता है। Water water everywhere yet not a speck of it. वह ज़िंदगी का पानी है जिसके पीने से सारी प्यास मिट जाती है।

(5) अवगुण छोड़ गुणां को धावो कर अवगुण पछताही जीओ॥

इस अमृत को पाने के लिए क्या करना चाहिए? अवगुण छोड़ दो, नेक पाक जीवन बना लो। Ethical life is stepping stone to spirituality, पहली ज़रूरी चीज़ है कि अवगुणों को छोड़ दो और अपने जीवन की पड़ताल करो। जो भी खामियां तुम्हारे अंतर में हैं अपनी खामियां, Shortcomings चुन चुन के निकालते चलो। माफ करना हमें यह पता भी नहीं कि हमारे अंतर क्या खामियां हैं, अपने आप पर कभी नज़र नहीं गई। दाराशिकोह कहता है कि हमें चाहिए कि हम अपने आपके खुद फ़कीर बनें। अब हमें प्रभु का जलवा अंतर में क्यों नज़र नहीं आता। कोई प्याला हो, उसमें मैला पानी भरा हुआ हो, उस प्याले में सुराख हों जिनसे बाहर की हवा प्याले के अंदर आ रही हो और पानी में हर दम बुलबुले उठते रहते हों, बताओ उस पानी में अपना अक्स (प्रतिबिम्ब) नज़र आयेगा? अपना अक्स उस प्याले में देखने के लिए हमें सबसे पहले वे सुराख बंद करने होंगे जिनसे हवा अंदर आ रही है और पानी में बुलबुले उठा रही है। जब पानी में लहरें उठनी बंद हो जायें तो फिर मैल छांटने के लिए उसमें फिटकरी डाल दो। पानी शांत हो गया, उसकी मैल छट गई तो फिर उसमें चेहरा नज़र आएगा कि नहीं। इंद्रियों के घाट से बाहर की हवा हर दम हमारे अंदर आ रही है जिससे मन में हवाएं उठ रही हैं। अंदर आगे ही जन्म-जन्म की मैल भरी पड़ी हैः

जन्म जन्म की इस मन को मल लागी काला होया स्याह।

पहली चीज़ यह है कि इंद्रियां दमन हो ताकि बाहर की हवा अंदर आकर मन में हिलोरें पैदा न करे। आंख, कान, ज़बान वगैरा पांचों ज्ञान इंद्रियों को रोको। इनमें तीन इंद्रियां बहुत ज़्यादा प्रबल हैं, आंख, कान और ज़बान की इंद्रियां। ज़्यादातर हिलोरें इन्हीं इंद्रियों के ज़रिये उठती हैं। शायर कहता हैः

चश्म बंदो गोश बंदो लब बर बंद।
गर न बीनी सिररे हक़ बर मन बिखंद॥

आंखों को बंद कर, कानों को बंद कर, ज़बान को बंद कर, तीनों इंद्रियों को रोको, अगर इसके बाद तुझे हकीकत का राज़ मालूम न हो तो फिर मेरी हंसी उड़ाना।

जो हिलोरें मन में उठ रही हैं उनमें 97 प्रतिशत इन तीनों इंद्रियों के ज़रिये उठ रही हैं। इन इंद्रियों को रोकने के लिए मन में हिलोरें उठनी बंद हो जायें तो थोड़ी अपने आपकी होश आए और फिर किसी अनुभवी पुरुष से नाम की फिटकरी मल लो जिससे जिस्म की मैलें छट जायें तो अंतर में परमात्मा का जलवा नज़र आने लगे।

घर ही बैठे शौह मिले जे नीयत रास करे।

कहीं बाहर जाने की ज़रूरत नहीं, बाहर से हट कर उसकी तरफ रुख करने की ज़रूरत है।

पूरा सतगुर भेटिये पूरी होवे जुगत॥

दुनिया को छोड़ने, घर बार त्याग कर जंगलों में जाने की ज़रूरत नहीं, थोड़ा Self-discipline (आत्म संयम) चाहिए। चौबीस घंटे दुनिया का काम करते हो, थोड़ा वक्त अपने काम के लिए भी दो। दुनिया और दुनिया के काम धंधे तुम्हारे साथ नहीं जाएंगे, आखिर यह छोड़नी पड़ेगी। ये सिलसिले तुम्हारे साथ नहीं जाएंगे।

हंस अकेला जाई

हम लोग दुनिया का काम करते हैं। अपना काम नहीं करते, दुनिया के धंधों में उम्र बीत जाती है, जीवन बरबाद चला जाता है। बड़े आदमियों को देखा, लाहौर में प्रोफैसर गुलशन राय थे, सारी उम्र लोगों की सेवा

करते रहे, बड़ी नेक रूह थी। उनके अंत समय मैं हस्पताल में उनके पास था। कहने लगे "I feel very strong" (मैं बहुत शक्तिशाली महसूस करता हूँ)। मैंने कहा- नेपोलियन भी यही महसूस करता था लेकिन बाद में वही कहता था कि मैं जिसके डर से सारा यूरोप कांपता था, आज आंख चाहूं तो भी नहीं खोल सकता। इतनी ताकत भी नहीं रही मुझ में। खलीफा नेमत राय वकील मेरे साथ थे, मैंने उनसे कहा, ''जो वसीयत वगैरा लिखवानी है अभी लिखवा लो, फिर शायद वक्त न मिले।'' वे बोले, ''अभी तो ये भले चंगे हैं, इतनी जल्दी क्या है, फिर लिखा लेंगे।'' मैंने कहा, ''अभी लिखवा लो जो लिखवाना है।'' थोड़ी देर के बाद मैंने कहा, ''आंखों के पीछे हटो, और हटो, रूह जिस्म से ऊपर आ गई, वसीयत पर दस्तखत कौन करे।'' दुनिया भर के काम हम करते रहे सियासी (राजनैतिक) इखलाकी, (नैतिक) समाज सुधार वगैरा का काम, घरबार का, समाजों का काम, अपना काम न किया तो क्या किया।

बिन बूझे मुगध अयाण

यह अनजान है या फिर मूढ़ है कि पढ़ने लिखने समझाने बुझाने के बावजूद नहीं समझता है। अपने जीवन की रोज़ पड़ताल करो, गिन गिन कर अपनी खामियों को बाहर निकालो, इस काम में बड़ा लुत्फ है, मैंने करके देखा है। स्कूल के ज़माने से मैं अपनी डायरी लिखता चला आ रहा हूं। शुरू शुरू में तो कोई अवगुण नज़र आना ही नहीं हमें [illegible] फिर जैसे जैसे महात्माओं की बाणी बढ़ी और उसके तात्पर्य को समझा किसी का दिल न दुखाओ, सत को धारण करो, सबके अंतर में परमात्मा है इसलिए सबसे प्यार रखो, निष्काम सेवा करो वगैरा। जब इस मियार पर ज़िंदगी को परखा तो अवगुण बढ़ने लगे, हकीकत में वे बढ़े नहीं, अवगुण पहले ही मौजूद थे, पहले उनका बोध नहीं था। जब आदमी यह महसूस करे कि वह गंदगी के ढेर पर बैठा है तो वह ज़रूर वहां से उठने का यत्न करेगा, इसलिए Self-

introspection (जीवन की पड़ताल) पहला कदम है। हाफ़िज़ साहब का कायदा था कि जब वे कोई गलती करते तो यादाश्त के लिए एक रोड़ा उठाकर एक कोने में फेंक देते। थोड़े दिनों में देखा कि कंकरों का एक बहुत बड़ा ढेर सामने लग गया। कहने लगे, या खुदा ! मैं इतने पाप कर रहा हूं। हमें अपनी खामियों का अहसास नहीं तो उसे दूर कौन करे। इसीलिए मैं बार बार इस बात पर ज़ोर देता हूँ कि अपनी डायरी रखो। When I say a thing, I mean a thing. मैं बिला वजह यह बात नहीं कहता, इसमें बड़ी भारी बरकत है, इससे तुम्हें टिकाव मिलेगा। नाम को फिलहाल छोड़ दो, नाम बड़ी ऊँची चीज़ है। खाली हृदय साफ हो जाये तो अंतर्यामता हासिल हो जाती है। ऐसे हृदय पर अनुभवी पुरुष की कृपा से नाम का वह रंग चढ़ेगा कि मज़ा आ जायेगा। मैले कपड़े पर भी कभी रंग चढ़ता है? हम लोग ज़हर भी खाते जाते हैं और हाय हाय भी करते जाते हैं। हम अवगुण छोड़ते नहीं, निंदा या बखीली, धड़ेबंदी, दूसरे का हक मारना, ये सारे काम करते हुए साथ में राम राम भी करते जाते हैं। लोगों के आगे हम कैसे ही नेक पाक बन जाएं मगर वह खुदा अंदर में हमारी हर हरकत देखता है, उसे तो हम धोखा नहीं दे सकते।

लोक पतीने कछु न होवे

हमारे हज़ूर फरमाया करते थे कि वह ताकत जो घट घट में बैठी है वह अभुल्ल है, जब तक साफ न हो। तो वह खींचने वाला जो अंतर में बैठा है ज़रूर खींचता है। जैसे बलून रस्सियों से जकड़ा हो तो ज़मीन से बंधा रहता है। रस्सियां कट जायें तो वह आसमान पर परवाज़ (उड़ने) करने लगता है। हमारी रूह भी रस्सियों से जकड़ी हुई है। ये रस्सियां कट जायें तो वह अपनी असल जगह की तरफ परवाज़ करेगी। दशम गुरु साहब फरमाते हैं:

वैर विरोध काम क्रोध लोभ। झूठ विकार, महालब, धरो॥
एहा जुगत बिहाने कई जन्म। नानक राख लेहो आपन कर करम॥

यही विकार जन्म-मरण के बंधन का कारण है। रूह तो रोज़ परवाज़

करेगी लेकिन इसके लिए जीवन की पवित्रता ज़रूरी है। हज़रत मसीह फरमाते हैं, Blessed are the pure in heart for they shall see God. हम Base (बुनियादी) चीज़ यानी जीवन की पवित्रता पर तवज्जो नहीं देते, Higher चीज़ यानी परमार्थ को पाना चाहते हैं। कुत्ता भी ज़मीन पर बैठता है तो पूंछ से जगह साफ करके बैठता है। कोई मामूली अफसर घर आ रहा हो तो हम कितनी सफाई करते हैं। हम चाहते तो यह हैं कि वह शाहंशाहों का शहंशाह हमारे अंतर में प्रकट हो और हृदय हमारे मैले हों तो यह क्योंकर मुमकिन है? जो अब तक पाप करते चले आ रहे हैं उनके लिए उम्मीद है अगर वह आगे के लिए तौबा कर लें और कहीं खड़े हो जायें। They must stop somewhere. मसीह के पास एक स्त्री को ले गये, उसने व्यभिचार किया था। उन्होंने लोगों से पूछा, ''तुम्हारी शरीयत ऐसी औरत के बारे में क्या हुक्म देती है?'' लोगों ने कहा, ''हम तो ऐसी औरत को पत्थर मार मार कर संहार कर देते हैं।'' मसीह ने फरमाया, ''बहुत खूब, अपनी रस्म पूरी करो मगर पहला पत्थर इस औरत को वह मारेगा जिसने ज़िंदगी में कोई गुनाह न किया हो।'' अब कौन सीने पर हाथ रख कर कह सकता है कि उसने कोई गुनाह नहीं किया। सब खड़े रह गये। फिर उस गुनाहगार औरत को मुखातिब कर के मसीह ने कहा, "Do no more", आईंदा ऐसी हरकत न करना। हज़ारों की संगत में हज़ूर के सामने कोई शख्स आकर अपने गुनाह का ऐतराफ (कबूल) करता तो वह फरमाया करते कि इतने आदमी यहां बैठे हैं उनसे पूछ, कोई तेरा गुनाह अपने सिर लेता है? ~~अब गुण तो सभी ग्रहण कर लेते हैं, दूसरे के पाप का बोझ सिर पर कौन उठाए?~~ फिर हज़ूर हाथ ऊपर उठाकर कहते, अच्छा अब आगे ऐसा मत करना।

मैल धोने के लिए नाम का महामंत्र है जिससे जन्म जन्मांतर की मैल धुल जाती है। मालिक से प्रार्थना करो कि ऐ मालिक, दया कर के हमें बख्श दो। आईंदा के लिए बाज़ आ जाओ तो बख्श दिये जाओगे।

लुकमान एक ज़मींदार के पास नौकर था। एक दिन मालिक ने लुकमान को कहा कि Barley Oats जा कर बोओ। यह उमदा मोटे जौ की एक किस्म है, एक मामूली जौ होते हैं, एक बारले ओटस। लुकमान

ने बारले ओटस की बजाय मामूली जौ बो दिये। फसल तैयार हो गई तो मालिक ने जा कर देखा कि बारले ओटस की जगह वहाँ मामूली जौ बोए गये थे। लुकमान से पूछा तो उसने कहा कि मैंने बोए तो मामूली जौ थे लेकिन मैं रोज़ मालिक (परमात्मा) के हज़ूर में दुआ करता था कि हे परमात्मा, मैंने मामूली जौ बोए हैं, तू अपने फ़ज़्लो कर्म (दया) से उन्हें बारले ओटस बना दे। ज़मींदार ने कहा, तुम बड़े बेवकूफ हो। लुकमान ने कहा कि मैं जब आपके जीवन पर नज़र डालता था कि सुबह से शाम तक आप ऐब करते हैं और सुबह सवेरे उठकर मालिक के आगे प्रार्थना करते हैं कि ऐ मालिक, हमें बख़्श दे, मैंने सोचा कि अगर यह शख़्स जो रोज़ गुनाह करता है और रोज़ दुआ करता है, बख़्शा जा सकता है तो मैंने जो मामूली जौ बोए हुए हैं वे भी बारले ओटस बन सकते हैं। बात हंसने की भी है और विचार करने की भी। हमारा जीवन नहीं रहा। समाजों के आगू (नेता) भी वे नहीं हैं, न भाई भाई रहे, न पंडित पंडित और न मुल्ला मुल्ला। अंदर की ध्वनि न रही, बाहर की शक्लों और बनावटों से क्या होता है। दशम गुरु साहब फरमाते हैं:

रहनी रहे सोई सिख मेरा। सो साहब मैं तिस का चेरा॥

फरमाते हैं ~~जिसकी रहनी अपनी है, जिसका जीवन सदाचार का जीवन है।~~ आज अगर कोई कमी है तो जीवन की कमी है, न उपदेश का घाटा है न रस्मो रिवाज़ का, न धर्म ग्रंथों का, न धर्म प्रचार का मगर जीवन नहीं रहा, अमल नहीं रहा, सदाचार नहीं रहा। लोग कोई काम शुरू करते हैं तो बड़ी श्रृद्धा और भाव सहित कहते हैं कि किसी पंडित को बुला लो, पादरी को बुला लो मगर समाज के उन पैराकारों (रहबरों) का वह जीवन ही नहीं रहा, सब बिज़नेस व्यापार हो रहा है। कबीर साहब फरमाते हैं:

इक दो होएं उन्हें समझाऊं

यहां तो सारी दुनिया बही जा रही है। महात्मा दुनिया को यही बातें समझाने आते हैं तो लोग डंडा लेकर उनके पीछे पड़ जाते हैं। उन्हें गलत रास्ते पर चलने वाला कहते हैं। वे क्या कहते हैं कि अवगुण छोड़ दो, नेक पाक जीवन बसर करो, जो गुनाह तुमने किए हैं उनके लिए पश्चाताप करो, गुनाहों की मैल को आंखों के पानी से धो दो, दिल के दाग किसी

और तरीके से नहीं धोए जा सकते हैं। आगे तुम अनुभव, Self-knowledge के लिए जाओ किसी अनुभवी महात्मा के पास।

दरख़्त को काटना हो तो पहले उसकी शाखों को काटो। शाखों का काटना क्या है? रोज़ रोज़ अपने जीवन की पड़ताल करना, एक एक कर के अपनी खामियों को बाहर निकालते जाना, रह गये जन्म जन्म के पिछले संस्कार, वह नाम काटेगा। नाम से लगने के लिए जाओ किसी अनुभवी महात्मा के पास। यह है महापुरुषों का उपदेश जो सारी मनुष्य जाति के लिए है, यह उपदेश किसी खास समाज के लिए नहीं। इस लिए जब महापुरुष चोला छोड़ते हैं तो सब समाजों वाले कहते हैं कि वे हमारे थे। एक बार श्री गुरु नानक साहब का जन्मदिन मनाया जा रहा था, उस मौके पर मुखतलिफ समाजों के उपदेशकों ने तकरीरें (भाषण) की। हिन्दू ने कहा, वे हिन्दू थे, मुसलमान ने कहा, वे मुसलमान थे। बाद में एक पादरी साहिब उठे, उन्होंने कहा, वे मसीह थे। महापुरुष सबके होते हैं, वे नूर के बच्चे होते हैं। They are the children of light. वे जब आते हैं तो सारी दुनिया को रोशनी दे जाते हैं। ~~संतों की बाणी में हर चीज़ के बारे में उपदेश मौजूद है, हर चीज़ को उन्होंने खोल-खोलकर ब्यान किया है~~, गुरबाणी कहती हैः

लेखे कदे न छुट्ट सी लिख लिख भुल्लणहार॥
बख्शणहारा बख्श ले नानक पार उतार॥

परमात्मा जिस पोल पर प्रकट है वह बख्श दे तो पार उतारा हो जाता है वरना कर्मों की सज़ा-जज़ा का सिलसिला खत्म नहीं होता।

यसु मसीह के जीवन का वाकेया है। एक दफा अपने एक शिष्य साईमन के घर गये। जैसे कि बड़े आदमियों का कायदा होता है, उसने बहुत से लोगों को इस मौके पर बुलाया हुआ था, बहुत से लोग इकट्ठे थे। इतने में एक जवान वेश्या आई। महात्मा की शकल सब में निराली होती है, हज़ारों में से नज़र आ जाता है। वेश्या ने मसीह को देखा, महात्मा को देखकर अपने अवगुणों का अहसास बढ़ता है। वेश्या ने बेअख्तियार अपना सिर मसीह के चरणों पर रख दिया और ज़ारों-ज़ार रोने लगी और अपने आंसुओं के पानी से मसीह के पांव धोए और फिर अपने सिर के बालों से उन्हें पोंछा। महात्मा यह नहीं देखता कि कोई पापी है या नहीं, वह तो भाव

को देखता है। वह सिर्फ यह देखता है कि यह इन्सान हार के मेरी शरण आ गया है। मसीह ने वेश्या को उठाया। अब दुनियादारों की जैसी अपनी नज़र होती है उसी नज़र से वे सब को देखते हैं। साईमन ने दिल में कहा कि अच्छा महात्मा है जो एक वेश्या से दोस्ती कर रखी है। उसके मन में अभाव आ गया। मसीह ने देखा कि मेरा शिष्य अभाव में आ गया है, मैंने ही उठाना है। फरमाया, ''साईमन!'' साईमन ने जो अभाव में आ चुका था बड़ी लाचारी से कहा, ''जी''। मसीह ने कहा अगर किसी शख्स ने एक आदमी से पांच सौ रुपये लिए हों और दूसरे से सिर्फ पांच रुपए और वह दोनों को अपना कर्ज़ा माफ कर दे तो बताओ उस ने किस पर ज़्यादा मेहरबानी की। साईमन ने मन ही मन सोचा कि महात्मा कितना चालाक है, चतुराई से बात छिपाना चाहता है। बोला, ''उस शख्स पर ज़्यादा मेहरबानी की जिसने पांच सौ रुपए देने थे।'' मसीह ने कहा, ''देख साईमन, मैं तेरा महमान था, तूने मेरे पांव नहीं धोए, तूने मेरे हाथ नहीं पोंछे, उसने अपने बालों से मेरे पांव पोंछ दिये हैं।'' फिर वेश्या से मुखातिब होकर मसीह ने कहा, "Madam I forgive thee for thou hast loved much." मैं तुझे क्षमा करता हूँ और यह कहकर उसने सिर पर हाथ रख दिया।

कुरान में ज़िक्र आता है, एक फ़कीर सारी उम्र जंगल में तपस्या करता रहा। वहां पानी का सिर्फ एक चश्मा था और सारे जंगल में एक अनार का दरख्त था जहां रोज़ एक अनार पकता था। वह चश्मे का पानी पीकर और अनार खा कर इबादत में मशरूफ हो जाता। जब खुदा के हज़ूर में गया तो अल्लाह ताला ने फरमाया, जा हमने अपने फज़लो करम से तुझे बख्श दिया। उसने दिल में सोचा कि सारी उम्र अल्लाह-अल्लाह करते गुज़र गई और अब भी खुदा की टांग ऊंची ही रही। इतने में कादिरे मुतअल्लिक ने फरमाया, ''कहो तो तुम्हारा हिसाब कर दिया जाये।'' उसने कहा, ''हां हज़ूर हिसाब हो जाये तो अच्छा है।'' अल्लाह ताला ने फरमाया, ''जिस जगह तू इबादत करता था वहां सैंकड़ों कोसों तक कहीं पानी का नाम निशान तक न था, हमने तेरे लिए ताज़ा पानी का चश्मा मुहैया किया। कुदरत के कानून के मुताबिक किसी भी दरख्त

पर हर रोज़ अनार नहीं पक सकता है। हमने तेरे खातिर कुदरत के सारे कानूनों को नज़रअंदाज़ कर के रोज़ एक अनार पकाया। यह हुआ तेरी उम्र भर की रियाज़त और इबादत का फल। अब फलां जगह जब तू जा रहा था तो हज़ारों कीड़े तेरे पांवों तले आ कर मर गये।" यहां तक बात सुनी तो आबिद को होश आ गई और गिड़गिड़ा कर कहने लगा, "ऐ खुदा, अपने फज़ल करम से तू मुझे बख्श दे।"

आमिल जो कहता है उसके कहने के मुताबिक कमाई करो। मन इंद्रियों के ऊपर आ गये तो दुनिया के सारे रस फीके पड़ जाते हैं। अनुभवी पुरुष तुम्हें मन इंद्रियों के घाट से ऊपर आने की पूर्ण युक्ति देता है। पीछे जो बुरे कर्म किए हैं उनके लिए दुआ करो, आगे के लिए बुरे कामों से बाज़ आ जाओ। पिछले संस्कार नाम की अग्नि से दग्ध हो जायेंगे। जो दाने भट्ठी में भून दिये जायें वे उगने के काबिल नहीं रहते।

(6) सर अपसर की सार न जाणे फिर फिर कीच बुडाही जीओ॥

फरमाते हैं कि हमें नेक व बद की सार नहीं। नेकी क्या है, बदी क्या है हमें खबर नहीं। बार बार हम इंद्रियों की गलाज़त में गिरते हैं। सब इंद्रियों में गलाज़त होती है। मुंह से लुआब और बलगम जाती है। नाक से सींढ, जिस्म से पसीना, आंख से गीड, यह सब गलाज़तें ही तो हैं। फरमाते हैं नेक व बद की हमें खबर नहीं। जितने भी साधन हमने किए सब इंद्रियों के घाट पर किए। लोग कहते हैं, अगर हम नेक पाक बन जायें तो फिर आप ही कल्याण हो जायेगा।

इंद्रियों के घाट पर बैठे हुए तुम पूरी तरह नेक पाक नहीं बन सकते, कहीं न कहीं गिरने का सामान बना रहेगा। इतिहास पढ़कर देख लो। पराशर ऋषि के साथ क्या हुआ? वे तो भला एक आध बार गिरे होंगे, हम तो रोज़ गिरते हैं। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर न आओ, अंतर में टिकने की जगह न मिले, बाहर के रस फीके न पड़ें, गिरने का सामान बदस्तूर बना रहेगा।

(7) अंतर मैल लोभ बहु झूठे बाहर नाहवो काही जीओ॥

अंतर के काम, क्रोध, लोभ की मैल भरी हुई है, बाहर नहाने से क्या होता है?

मन मैले तां सब किछ मैला तन धोते मन हच्छा न होए॥

बाहर नहाने से मन तो अच्छा नहीं होता, हां उससे बदन में चेतनता ज़रूर आती है। नहाना किसी काम में मददगार साबित हो सकता है मगर मन की मैल तो बाहर नहाने धोने से नहीं उतरेगी। अब आगे बताते हैं कि अंतर की मैल कैसे साफ होगी।

(8) निरमल नाम जपो सद गुरमुख अंतर की गत ताही जीओ॥

अब निर्मल नाम कहा है। इसका मतलब है कोई अलायशी (मैला) नाम भी है। जो अंतर जाने वाले हैं वे इस बात को समझेंगे। नाम की जो धारा है उसमें तत्वों की धारा भी मिली हुई होती है स्थूल माया से। जिस्म से ऊपर आ गये तो स्थूल तत्वों की धारा छट गई। इस तरह सूक्ष्म और कारण तत्वों की धारायें हैं। स्थूल, सूक्ष्म, कारण से ऊपर आकर निर्मल नाम की धारा मिलती है। नाम महिमा ऊपर आ चुकी है। दो किस्म के नाम हैं, एक अक्षरी नाम जो उस रमी हुई घट घट व्यापी ताकत का बोध कराते हैं। एक वह नाम पावर जिसका अक्षरी नाम बोध कराते हैं। अल्लाह, राम, वाहेगुरु, खुदा ये सब अक्षरी नाम हैं। इन अक्षरी नामों से चलकर हमने नाम के साथ, उस पावर के साथ लगना है जिसका बोध अक्षरी नाम करा रहे हैं। नाम से चलकर नामी को, Name से चलकर Named को, Denote से चलकर Denotee को हमने पकड़ना है। आब, वाटर, पानी, जल ये अक्षरी नाम एक चीज़ का बोध करा रहे हैं। इन नामों का उच्चारण करते रहो प्यास तो नहीं बुझेगी। प्यास बुझाने के लिए पानी को पीना पड़ेगा। सो फरमा रहे हैं श्री गुरु नानक साहब कि निर्मल नाम के साथ लगो, तुम्हारी सब मैलें दूर हो जायेंगी।

दुनिया अक्षरी नामों के साथ उलझ कर रह गई। उलझ रही है से मेरी मुराद यह है कि उन अक्षरी नामों को ही Be all and end all, सब कुछ समझे बैठी है। दुनिया की हालत क्या है, जैसे चार अंधे हाथी को देख रहे थे कि किसी के हाथ सूंढ आई, किसी का हाथ पांवों पर जा पड़ा, कोई पेट को टटोलने लगा, सबने एक एक अंग से अंदाज़ा किया कि यही हाथी है। हम इंद्रियों के घाट पर सो रहे हैं, हर चीज़ को जिस्म के लेवल से देख रहे हैं। जागृत पुरुष जो इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर

अपने आप में जाग उठा है वह देखता है कि सब कुछ इसके अंतर में है। दुनिया के लोग अपने अपने अंदाज़े लगाते हैं। कोई कहता है वह आकार है, कोई कहता है वह निराकार है। जिसने हकीकत को पा लिया उसे सब कुछ उलट दिखाई देता है। दुनिया के लोग उसे बाहर तलाश करते हुए अपने अपने अकल के अंदाज़ों की जकड़ों में रह गए। जब तक कोई अनुभवी पुरुष न मिले, इंद्रियों से ऊपर लाकर उस रमी हुई घट घट व्यापी नाम पावर का Contact न मिले, उस का ताल्लुक न दे सही मायनों में हम उस नाम पावर को समझ ही नहीं सकते। श्री गुरु नानक साहब ने मिसालें देकर समझाने का यत्न किया है कि नाम पावर के साथ लगने से कैसे मैल कटती है।

भरिये हत्थ पैर तन देह॥ पानी धोते उतरस खेह॥
मूत पलीती कप्पड़ होए॥ दे साबण ओह लइए धोए॥

हाथ पांव मिट्टी से सन जाते हैं तो पानी से धोए जा सकते हैं, कपड़े गलाज़त (गंदगी) से लुआब हो (भर) जायें तो साबुन से धोये जा सकते हैं। आगे फरमाते हैं:

भरिये मत पापां के संग॥ ओह धोपै नावें के रंग॥

जन्म जन्म की मैल धोने का ज़रिया नाम है। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर ज्ञान अग्नि से न लगो तब तक कर्मों की यह मैल दूर नहीं होती। ज्ञान क्या है? गुरबाणी ने ज्ञान की तारीफ की है:

ज्ञान ध्यान धुन जाणिए अकथ कहावै सोए॥

जिन्होंने हकीकत को पा लिया वे पुकार पुकार कर कहते रहे, यही चीज़ है। यह ध्वनि, आकाशवाणी जो हर वक्त हर इंसान के अंतर में लगातार हो रही है इसे पा लो। बाकी कर्मों धर्मों का जो भी सिलसिला है वह उसी परमार्थ के पाने के लिए ज़मीन की तैयारी है। हम जिस्म के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, जिस्म पुष्ट होना चाहिए, इसकी भी ज़रूरत है, बुद्धि के भी पहलवान बनो लेकिन इन दोनों का आधार तुम्हारी आत्मा है उसको न जाना तो सब किया कराया बेकार। इसलिए सब धर्म ग्रंथों ने और जितने ऋषि मुनि महात्मा आज दिन तक आए उन सब ने यही कहा कि अपने आप को जानो। श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं:

कहो नानक बिन आपा चीन्हे मिटे न भरम की काई॥

हज़ूर स्वामी जी महाराज फरमाते हैः

चेतन रूप विचारो अपना

बाईबल कहती है, Know Thyself. तुम जिस्म नहीं, तुम जड़ नहीं चेतन हो, निर्मल हो। यह तो है परमार्थ का सार, और दुनिया क्या समझे बैठी है। संत महात्मा किसी को बुरा नहीं कहते। वे हर चीज़ के बारे में सही नज़री से काम लेना सिखलाते हैं। वे न समाजों को तोड़ते हैं न नई समाज बनाते हैं। वे आप आज़ाद होते हैं, दुनिया को जकड़ों से आज़ाद कराने आते हैं।

(९) परहर लोभ निंदा कूड़ त्यागो सच गुर बचनी फल पाही जीओ॥

अब और वाजह करते हैं इस मज़मून को कि पर‍हर छोड़ दो। जिसकी आंख लोभ से रंगी हुई है वह उसी नज़र से दुनिया को देखेगा, उससे हज़ारों के गले पर छुरी फिरवा लो। दस बीस लोग रख लो। उनसे जो चाहो कहलवा लो, झूठ सच सब बराबर हो जाता है। संत कहते हैं सुनी सुनाई बात पर यकीन न करो, अपनी आंखों से देखो, अपने कानों से सुनो तब यकीन करो। संतों की बड़ी आज़ाद तालीम है। वे कहते हैंः

जब लग न देखूं अपनी नैनी॥
तब लग न पतीजूं गुर की बैनी॥

जो सुनी सुनाई बात पर यकीन कर के मारे मारे फिरते हैं कि फलां ऐसा है फलां ऐसा है या जो लोभ लालच में बंधे पड़े हैं वे कैसे सच कह सकते हैं। निंदा क्या है? किसी चीज़ को या तो Over rate (बढ़ा चढ़ाकर कहना) करना, उसके बारे में मुबालिग से काम लेना या फिर उसे Under rate (घटाकर कहना) करना, उसकी असल अहमियत को घटाना। हज़ूर के वक्त में जिसे कहते थे कि यह एम.ए. पास है, आज कहते हैं कि वह पहली जमात भी पास नहीं। Hate the sin but love the sinner. नेक की निंदा तो नहीं करनी चाहिए, बुरे की निंदा भी न करो। गंदगी पर पत्थर फेंकोगे तो तुम पर भी छींटे पड़ेंगे। सब से प्यार करो, प्यार में बड़ी बरकत है। मसीह कहता है, Love and all things shall be added unto you. ज़बान में मिठास होनी चाहिए और दिल

में सबके लिए प्यार, दया का भाव। आगे फरमाते हैं कूड़ भी छोड़ दो। कूड़ कहते हैं फना चीज़ को। गुरबाणी में कूड़ की यह तारीफ की है:

कूड़ राजा कूड़ परजा कूड़ सब संसार॥
कूड़ कूड़े नेहो लग्गा विसरेया करतार॥
किस नाल कीजे दोस्ती सभ जग चल्लणहार॥

फानी जिस्म (नश्वर देह) का फानी जिस्मानी ताल्लुकात से प्यार लगा और वह मालिक को भूल गया। यह सारा दृश्य जगत फानी (नाश्वान) है, हम इस में ज़रा सी देर के राही हैं, राही का राही से प्यार क्यों? दुनिया की चीज़ों में हमेशा रहने वाली कौन सी चीज़ है? लोभ का कुत्ता भौंकता है, उसे बंद करो, निंदा छोड़ो, देखो तो किसी के गुण देखो, बुराई न देखो ताकि आलायशों का असर तुम पर न हो। दो तरीके हैं प्रचार के एक पोज़िटिव दूसरा नैगेटिव, कहीं लिखा हो 'इसे मत पढ़ो'। आप ज़रूर पढ़ेंगे। मैंने एक किताब पढ़ी थी, उसका नाम 'Fore thought v/s Pre thought' था। उसमें लिखा था कि मसीही मिशनरी जापान गये। वहां लोगों को उपदेश दिया, Thou shall not strike a woman, औरतों पर हाथ मत उठाओ। जापान वाले हैरान कि आपके यहां औरतों पर भी हाथ उठाया जाता है। उनके वहमो-गुमान (ख्याल) में भी यह बात न आई थी कि औरतों को भी पीटा जाता है। कुछ अर्से के प्रचार का नतीजा यह हुआ कि वे सचमुच औरतों को पीटने लगे। नैगेटिव प्रचार का नैगेटिव असर होगा। पापी से भी प्यार करो तो वह अपनी खसलत (स्वभाव) बदलने पर मजबूर हो जायेगा।

जिन्नी चल्लण जाणेया सो क्यों करें विथार॥

जिसने इस हकीकत को जान लिया कि ज़िंदगी चंद रोज़ा है, दुनिया की कोई चीज़ हमेशा रहने वाली नहीं है वह क्यों झूठ, दगा, फरेब से काम लेगा। महापुरुषों का उपदेश सारी दुनिया के लिए होता है, वे किसी समाज या जाति के गुरु नहीं होते, वे सारी दुनिया को रोशनी देते हैं। उनकी शख्सियत और उनका उपदेश किसी खास समाज या जाति का अज़ारा 'Reserved Right' नहीं। वे सारी मनुष्य जाति की मिरास हैं। श्री गुरु नानक साहब को काज़ी के पास ले गये कि यह कहता है कि

हिन्दू मुस्लिम सब एक हैं, यह कुफ्र का प्रचार करता है। काज़ी ने पूछा आप कौन हैं? उन्होंने जवाब दियाः

हिन्दू कहां ते मारिये मुसलमान भी नाहिं॥

अगर मैं कहूं कि मैं हिन्दू हूं तो तुम जिस्म व जिस्मानियत की जकड़ों के कारण मुझे मारते हो। जिस चीज़ को तुम मुसलमान समझे बैठे हो ज़ाहिरी शकलों, बनावटों और शरीयत के चिह्न चक्रों को, मैं उस नज़र से मुसलमान भी नहीं।

पांच तत्त का पुतला गैबी खेले माहिं॥

पांच तत्वों का पुतला यह जिस्म है जिस में गैबी ताकत काम कर रही है वह मैं हूं। हज़ूर से भी किसी ने यही सवाल पूछा, उन्होंने फरमाया कि परमात्मा हिन्दू है तो मैं हिन्दू हूं, वह मुसलमान है तो मैं मुसलमान हूं, वह सिख है तो मैं सिख हूं। आत्मा की वह जात है जो परमात्मा की। महापुरुषों की नज़र है। कहां वे कहां हम। वे अर्श (आसमान) पर प्रवाज़ करने वाले और हम नीचे जकड़ों में पड़े हुए हैं। हम तो उनकी वाणी को समझने के भी काबिल नहीं।

(10) ज्यों भावे त्यों राखो हर जीओ जन नानक शब्द सलाही जीओ॥

अब प्रार्थना कर रहे हैं कि ऐ मालिक, दुनिया अधोगति में जा रही है, सारा जगत जल रहा है। तुम दया करके जैसे भी बने इसे बचा ले।

जगत जलंदा रख लै प्रभ आपण किरपा धार॥

जिस हीले से भी ये बच सकते हों इन्हें बचा ले, कितनी दर्द भरी अपील है। ये लोग दुनिया का दर्द अपने सिर ले लेते हैं। हज़ूर से मैंने एक बार पूछा कि महाराज आप तो नेहकर्म हैं, आप को क्या चिंता है। फरमाया, जब दूसरों का भार सिर पर उठाया है तो वह भी अपना है। महापुरुष दुनिया का दुख हरने के लिए आते हैं, तारीख (इतिहास) उठा कर देख लो। श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं:

नानक नाम चढ़दी कला॥ तेरे भाणे सरबत्त का भला॥

वे सबका भला चाहने वाले होते हैं। इस शब्द में कितनी खूबसूरती से बताया है कि इंद्रियों का घाट छोड़ दो और अंतर में नाम से लगो।

अब प्रार्थना करते हैं कि ऐ मालिक, सबका भला कर। कितना विशाल हृदय है उनका। हमारी प्रार्थना क्या होती है? हमारे बाल-बच्चे राज़ी हों, हमारा समाज, हमारा देश ठीक रहे। वे सारी मनुष्य जाति का उधार करने वाले होते हैं। जैसे बाहर की बादशाहत है वैसे अंतर की बादशाहत है। वे सच्चे पातशाह होते हैं जिन्हें प्रभु जीवों के उधार के लिए भेजता है।

◆◆◆◆◆